राज्य की सुंदरता को देख किताब लिखने की मिली प्रेरणा : मिहिर

सलाउद्दीन, हजारीबाग

हजारीबाग निवासी मिहिर वत्स को बुधवार को साहित्य एकेडमी युवा पुरस्कार 2022 देने की घोषणा की गयी. उनकी मां तनुजा मिश्रा हजारीबाग इंदिरा गांधी आवासीय विद्यालय की सेवानिवृत्त शिक्षिका हैं. मिहिर ने 'टेल्स ऑफ हजारीबाग, एन इंटीमेंट एक्सप्लोरेशन ऑफ छोटानागपुर प्लेटो' नामक पुस्तक अंग्रेजी भाषा में लिखी है. यह हजारीबाग पठारी क्षेत्र यात्रा संस्मरण है. मिहिर ने कहा कि अवार्ड मिलने से वे काफी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं. उन्हें ताम्रपत्र व 50 हजार की पुरस्कार राशि मिलेगी. झारखंड की पठारी भूमि और सुंदरता को देख कर किताब लिखने की प्रेरणा मिली.

उन्होंने बताया कि पहली पुस्तक 2014 में काव्य संग्रह प्रकाशित हुई थी. पुस्तक का नाम पेंटिंग रेड सर्किल वाइट है. 2013 में श्रीनिवास राइप रोल पोइट्री में पुरस्कार मिला. 2015 में देश के सबसे युवा चाल्र्स वौलेश फेलोशिप मिला. आगे का लक्ष्य शोध करना है.

आइआइटी से पीएचडी कर रहे

मिहिर का जन्म हजारीबाग में हुआ है. मैट्रिक व प्लस टू की पढ़ाई डीएवी स्कूल, हजारीबाग से की. स्नातक और पीजी की पढ़ाई दिल्ली से की. पिता किशोर कुमार झा संस्कृत विषय के व्याख्याता हैं. सहरसा (बिहार) के रहनेवाले हैं. वर्तमान में मिहिर वत्स मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग आइआइटी, दिल्ली से पीएचडी कर रहे हैं.

जन्मभूमि वीरान होने की कहानी ने दिलाया पुरस्कार : सालगे

प्रमुख संवाददाता, जमशेदपुर

बारीगोड़ा निवासी सालगे हांसदा को साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2022 के लिए चुना गया है. संताली उपन्यास जानाम दिशोम उजाड़ोक काना (जन्मभूमि वीरान हो रही है) के लिए सालगे हांसदा को पुरस्कार मिलेगा. पुरस्कार के रूप में एक ताम्रपत्र और 50 हजार रुपये दिये जायेंगे. सालगे हांसदा ने बताया कि वे घाटशिला कॉलेज में क्लास ले रही थीं, तभी फोन कर साहित्य सम्मान (2018) हासिल कर चुकी रानी मुर्मू ने यह जानकारी दी. इसके बाद उन्हें झारखंड आंदोलनकारी व साहित्यकार सूर्य सिंह बेसरा ने फोन कर बधाई दी. सालगे के अनुसार, उन्होंने 2015-16 से कविता लिखना शुरू किया था. दिशोम उजाड़ोक किताब में उन्होंने 'काना यानी जन्मभूमि वीरान हो रही है' को 2018 से लिखना शुरू किया. पुस्तक का विमोचन पद्मश्री दयमंती बेसरा ने बारीपदा में किया था. कहानी में है कि बारीगोड़ा में जमीन के मालिक कैसे बेघर होते जा रहे हैं. अभी वे कुछ शॉर्ट स्टोरी लिख रही हैं.

कौन हैं सालगे हांसदा

बारीगोड़ा निवासी स्व गालुराम हांसदा और सीता हांसदा (एक बेटे व चार बेटियों) की सबसे छोटी बेटी सालगे हांसदा का जन्म 23 अक्टूबर 1989 को लिया. उनकी आरंभिक शिक्षा बारीगोड़ा सामुदायिक स्कूल से हुई. कोल्हान विश्वविद्यालय से संताली भाषा में स्नातकोत्तर किया. अभी सालगे हांसदा एसआरएम डिग्री कॉलेज चाकुलिया में सहायक प्रोफेसर हैं.